Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

पर्यावरण संरक्षण–एक नैतिक प्रयास

डॉ0 रुचि पाण्डेय
एसो0 प्रोफेसर संस्कृत, आगरा कॉलेज आगरा, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4 Issue 1
Page Number: 132-135
Publication Issue :
January-February-2021
Article History
Accepted : 02 Feb 2021
Published :15 Feb 2021

सारांश–पर्यावरण की सुरक्षा हमारा मानवीय व नैतिक धर्म है और उनके प्राकृतिक स्वरूप को संरक्षित करना हमारा कर्तव्य प्रारम्भिक समय में आस्था से जोड़कर प्राकृतिक के सुरक्षा पर बल दिया गया था। आज भौतिक चकाचौंध और पाश्चात्य सांस्कृतिक के प्रभाव ने समय और साधन तो जुटा दिये, लेकिन प्रकृति के साथ उतनी पर दूरी को भी बढ़ दिया। नदियों में मलिनता, वृक्षों का कटाव जंगलों का नाश वन्य प्राणियों की अधिकांश जातियों का लोप, पर्वतों का लोप होना जिससे मानव विकास का नाम देता है, उसकी हठधर्मिता का ही परिणाम है।

मुख्य शब्द–पर्यावरण, संरक्षण, नैतिक, प्रकृति, सुरक्षा, मानव, विकास।

प्रकृति मानव की सहचरी और संरक्षिका है। प्रकृति की क्रोड में ही मानव ने अपने अन्दर स्पन्दन का अनुभव किया और शनैः शनैः विकास के स्वर्णिम मार्ग पर अग्रसरित होकर जीवन को नई दिशा दी। प्रकृति ने जल, वायु, अग्नि, आकाश, पृथ्वी के शाश्वत रूप में न केवल अपना रूप सौन्दर्य संजोया बल्कि मानव को भी अपने इस उपहार से महिमा मण्डित किया। वैदिक सूक्तों में वर्णित है। ऋषि मुनियों का अनुभूत ज्ञान प्राकृतिक संसाधनों (वायु, अग्नि, सूर्य, इन्द्र, उषस, वरुण, पृथ्वी) का गान कर न केवल प्रंकाशित हुआ अपितु उनके प्रति अपनी आस्था को भी प्रदर्शित करता है, ताकि इन तन्त्वों का अनुग्रह हम पर निरन्तर बना रहे है। ''महाकवि कालिदास के समस्त काव्यों में प्रकृति मानव की सहचरी रही है।''

प्राकृतिक सम्पदा–(Natural Environment)—जड़ और चैतन्य में सामंजस्य स्थापित करता है। शाश्वत प्राकृतिक संसाधनों में वायु, जल, वातावरण, ऋतुएँ आदि का समावेश किया जाता है।

प्रकृति और पुरुष का सम्बन्ध सृष्टि प्रारम्भ से है। ऋग्वेद की ऋचाओं में वायु, पृथ्वी, इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि के प्रति अपनी भावनाओं का प्रकाशन कर उनके अनुग्रह की कामना की है।

कवि कालिदास के ग्रन्थों में प्रकृति का जो रूप वर्णित है, वह निःसन्देह अप्रतिम है। ऋतुसंहारम् में ग्रीष्म वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर और बसन्त इन छः ऋतुओं का अतीव मनोग्राही वर्णन किया है। इसी प्रकार 'मेघदूतम्' में रामगिरि आश्रम से लेकर अलका नगरी तक के मार्ग की प्राकृतिक शोभा को दर्शाया है।

''अभिज्ञान शाकुन्तलम्'' में सौन्दर्यपरक उपमानों प्रकृति का ही अवलम्बन लिया है : –

सरसिजमनुविद्धंः शैवलेनाऽपि रम्यं
मलिनमऽपि हिमांशु लक्ष्मलक्ष्मीं तनोति।
इयमधिक, मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्'' (प्रथम अंक/20)

प्रकृति प्रेम ही पर्यावरण को सुरक्षित रखने का सर्वोत्तम उपाय है, जो कि कालिदास ने शाकुन्तलम् के माध्यम से वर्णित किया है। 'कण्व' ऋषि का यह कथन –

पातुं न प्रथम व्यवस्यति जलम्युष्मास्वपीतेषु या।
नादते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुम प्रसूति समये यस्या भवत्युत्सवः।
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सवैरनुज्ञायताम्। (४/६)

शकुन्तला का मार्ग शीतल अनुकूल पवन से मुक्त हो यह कल्याण की भावना शाकुन्तलम् के चतुर्थ के ग्यारहवें श्लोक में वर्णित की गई है।

रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभिः
श्छायाद्रुमैः नियमितार्कमयूरतापः।
भूयात् कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः
शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः।। (४/११)

आस्थावादी दृष्टिकोण से चिन्तन करने पर श्रीमद्भगवद्गीता (निष्कामकर्म की सन्देशवाहिका) का प्रस्तुत श्लोक प्रकृति के उपादान तत्वों में से एक वृक्षों की मुख्यता को दर्शाता है–

अक्षत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षाणा च नारदः
(अध्याय–१०)

प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री जगदीशचन्द्र वसु ने 'पौधों' में विकास तथा स्पदंन पहले ही अनुभूत व शोधित कर लिया था।

दार्शनिक रूपसे चिन्तन करने पर सांरव्यदर्शन में वर्णित 'पुरुष' और 'प्रकृति' का स्वरूप प्रकृति के साथ साञजस्य को वर्णित करता है। सृष्टि प्रक्रिया में दोनों का ही महत्वपूर्ण योगदान है : –

''रंगस्य दर्शयित्वा निवर्तते नर्तकी यथा नृत्यात्
पुरुषस्य तथाऽस्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते प्रकृतिः।''

जिन तत्वों की प्रमुखता व महन्ता को ''मनीषियों'' ने अपने अन्तर्चक्षुओं से देख लिया था, उसमें वन, उपवन, जंगलों का भी अपना विशिष्ट योगदान है क्योंकि ऋषियों ने साधनास्थली के लिए इनका ही चयन किया था। जंगल हमारे लिए वरदान है। देश के Climate के लिए आर्थिक स्थिरता के लिए 33% Land are जंगलों से ही घिरा है। दुर्भाग्यवश यह **Are 11%** रह गया है। बढ़ी आबादी, मल्टीस्टोरीज बिल्डिंग भौतिकता ओर बढ़ते चरण, जंगलों का नाश कर रहे हैं।

सरकार ने इसके लिए 1984 में A forest Policy Act बनाया जिसका मुख्य उद्देश्य जंगलों की सुरक्षा और व्यवस्था थी लेकिन स्वार्थपरक मानव अपने हितों के लिए नियमों की गौण बना देता है। जंगलों के नष्ट होने के कई कारण हैं, निम्न प्रमुख हैं–

1. Industrialization, Urbanization & agricultural practices.
2. Area grazing soil erosion;
3. Shifting cultivation.
4. Meaning activities constructions of dame of dame reservoirs.

5. Fires accidental or deliberate
6. Slow growth of trees.

इसके लिए उपाय–

1. हमें जागरूक होना होगा
2. स्वार्थ साधनों को कम करना होगा।
3. Natural resources को बचाना होगा।
4. Natural resources को Carefully & wisely सावधानीपूर्वक और बुद्धिमता से उपयोग में लाना होगा।
5. दूरदर्शन पर दिखाई गई टेलीफिल्म 'चेलवी' इसी Theme पर थी। सरकार द्वारा जगह–जगह नारों को उद्धृत करना ''बंजर धरती करे पुकार'', वृक्ष लगाकर करो श्रृंगार भी जन जाग्रति का सफल प्रयास है।

जंगलों के नाश से वन्य प्राणियों पर भी संकट के बादल घिरने लगे हैं। हालांकि सरकार ने Wild Life Protection Act-1972 में ससंद में Pass किया था। जिसमें वन्य प्राणियों की Capturing Killing, Poisoning Snorting and trapping करने पर दण्ड का विधान था। Damaging the eggs and nests of vide birds of reptiles. को हानि पहुँचाने पर पर भी दण्ड दिया जायेगा। लेकिन सच तो यह कि–

हम ही अपने घर में बेगाने हो गए,
गैर तो गैर थे, अपनों के मायने बदल गए

इन्सान ने अपनों को ही बेचना शुरू कर दिया। The skin hide and bones from tigers Ivory from elephants, harm from rhinoceros perfume from must dear, good money from foreign countries.

अतः इन वन्य जातियों की सुरक्षा हमारा धर्म है। जल का अथाह भण्डार (Saline Water) Ocean के नाम से वर्णित है। पृथ्वी का 71% भाग (An are of some 362 million squire kilometers) सागर से घिरा है। Saline water होने के कारण सागर का पानी उपयोगी नहीं है। परन्तु विज्ञान के नवीन प्रयोगों ने समुद्री जल को भी उपयोगी बना लिया है। झरने अपने मनोरम रूप को दर्शाते हैं। प्रकृति का यह अनुपम उपहार हमें विरासत में मिला है।

Energy Climate Electric charges\ and Magnetism प्रकृति ने सदैव मानव की क्रियाशीलता को बल दिया है, किन्तु विकास के पथ पर आरूढ़ होते मानव ने प्रकृति की अनदेखी करते हुए उसके स्वरूप को विकृत करना प्रारम्भ कर दया।

पर्यावरण की सुरक्षा हमारा मानवीय व नैतिक धर्म है और उनके प्राकृतिक स्वरूप को संरक्षित करना हमारा कर्तव्य प्रारम्भिक समय में आस्था से जोड़कर प्राकृतिक के सुरक्षा पर बल दिया गया था। आज भौतिक चकाचौंध और पाश्चात्य सांस्कृतिक के प्रभाव ने समय और साधन तो जुटा दिये, लेकिन प्रकृति के साथ उतनी पर दूरी को भी बढ़ दिया। नदियों में मलिनता, वृक्षों का कटाव जंगलों का नाश वन्य प्राणियों की अधिकांश जातियों का लोप, पर्वतों का लोप होना जिससे मानव विकास का नाम देता है, उसकी

हठधर्मिता का ही परिणाम है। सरकार द्वारा चलाये गये अभियान व योजनाएँ कितना सजग व जागरूक की है, यह तो समय ही बतायेगा किन्तु हमें जागरूक होकर अपने प्राकृतिक संसाधनों को सहेजना होगा, अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब हम विश्व बैंक के ऋण के समान अन्य देशों से जल, वायु, आदि की भी माँग करने लगेंगे और हमारा जीवन अन्य देशों का ऋणी होकर समाप्ति के कगार पर पहुँच जायेगा।

अनुक्रमणिका

1. साख्यकरिका – ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित
2. अभिज्ञान शाकुन्तलम्–कालिदास
3. मेघदूतम् का शैली वैज्ञानिक अध्ययन शोध ग्रन्थ–डॉ0 रुचि पाण्डेय सन् 1984
4. मेघदूतम् –मूल ग्रन्थ
5. श्रीमद्भगवद्गीता